प्रगतिवाद

1936 - 43

20सवीं शती की पूर्वार्द्ध में, हिन्दी साहित्याकाश में जो नवीन परिवर्तन लाई वह वाद प्रगतिवाद है। इसका समय हिंदी साहित्य के इतिहास में सन 1936 से 1943 तक का है। प्रगतिवाद के उल्लेखनीय कवि हुए। नगेन्द्र, पंत, निराला, रामविलास शर्मा, नेमीचन्द जैन।

छायावाद के प्रवृत्तियों में ह्रासोन्मुख आ जाने पर हिंदी काव्य धारा में नवीन प्रतिष्ठा हुई, जिसे प्रगतिवाद कहा गया। प्रगतिवाद मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है। जो राजनीति क्षेत्र में साम्यवाद है वह साहित्यिक क्षेत्र में प्रगतिवाद है। प्रगतिवाद दलित, शोषित पीड़ित तथा धार्मिक विचारधारा के प्रति जो सहानुभूति दिखाई है, वह साहित्यिक क्षेत्र में निराला ने

प्यार मुहब्बत तथा प्रकृति प्रेम को छोड़कर, समाज में व्यथित शोषित जनता के प्रेम को निहारने का प्रयास प्रगतिवाद के कवि किए। पूँजीवाद का तावरतोड़ विरोध किया गया। साम्य का समर्थन किया गया। तथा व्यक्ति-व्यक्ति के मर्यादा को बचाने का प्रयास प्रगतिवादी कवि किया। इस तरह समाज में नवीन वाद का आविर्भाव हुआ। जो हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रगतिवाद है। इसके प्रवृत्तिया निम्नलिखित:

- I. पूँजीवाद का विरोध
- II. साम्यवाद का समर्थन
- III. सांस्कृतिक समन्वय की भावना
- IV. भाषा शैली
- V. बौद्धिकता तथा व्यंग्य का प्रसार
- VI. कला पक्ष
- VII. क्रांति की भावना
- VIII. सामाजिक समस्याओं का निरूपण
- IX. निष्कर्ष :

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी विभाग
डॉ. एल.के.वी.डी. कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

बलराम कुमार